



विचारोत्तेजक सामग्री

मीडिया मीमांसा का अप्रैल-जून 2009 का अंक मुंबई पर आतंकवादी हमले के दौरान टीवी चैनलों की गैर जिम्मेदाराना रिपोर्टिंग की गहराई से पड़ताल करता है। इसी के चलते मीडिया के नियमन, कानूनी नियंत्रण या कि राष्ट्र और समाज हित के नाम पर खबरों में चलनी लगाने की बात जोर-शोर से उठने लगी है। मीडिया को आत्मनियमन का परामर्श दिया जा रहा है। काफी दूर तक इसमें सच्चाई भी है, क्योंकि अपनी सर्वोच्चता की बद्गुमानी और टीआरपी की अँधी दौड़ ने मीडिया को मदद कर दिया है। कहा तो यह जाता है कि दर्शक जो चाहते हैं वही दिखाया जा रहा है जबकि वास्तविकता यह है कि चैनल जो भी अच्छा-बुरा परोस रहे हैं, उसे देखने के लिए दर्शक अभिशप्त हैं। मीडिया को इतना तो ध्यान रखना ही होगा कि 'प्रचार आतंकवाद की प्राणवायु है' (यह उक्ति अंक के एक लेख में है) किन्तु मीडिया पर नियंत्रण के अभिशाप को सारा देश आपातकाल के दौरान भुगत चुका है, उसे भी ध्यान में रखना होगा। मीडिया को कानूनी डंडे से हाँकने की हर कोशिश का विरोध होना चाहिए। क्योंकि न तो यह लोकतंत्र के हित में है और न ही भारतीय समाज के। आतंकवाद जैसी वैश्विक समस्या से जुड़ी घटनाओं के बारे में लिखते/प्रसारित करते समय प्रस्तुति, भाषा, दृश्यांकन तथा सूचना प्रसारण का समय, सीमा, परिणाम इन सभी पक्षों की गहन विचारोत्तेजक ज्ञानवर्धक सामग्री इस अंक में है।

अंक में प्रकाशित गोर्की का आत्मकथ्य "मैंने लिखना कैसे सीखा" इस मायने में बड़ा मौजू बन पड़ा है कि यह लिखने वालों जिनमें पत्रकार भी शामिल हैं (और व्यापक अर्थ में बोलने वाले टीवी पत्रकार) को लिखने का मूलमंत्र और उद्देश्य बतलाता है। वस्तुतः मीडिया-मीमांसा का यह अंक पठनीय है और इसलिए संग्रहणीय भी। इसके लिए विश्वविद्यालय के साथ अंक के सभी लेखक बधाई के पात्र हैं।

आनंद मोहन सिन्हा
निराला नगर, भोपाल

A very novel approach

The titles 'Media Mimansa' and 'Media Critique' struck me as a very novel approach to cover a wide readership. How I wish other magazines could also adopt this bilingual pattern.

The latest issue (April-June 2009) impressed me the most because of its central theme 'Media and Terrorism'. While the whole world reels under the impact of this uncontrollable ogre, the media's role is becoming increasingly significant in making or marring the situation.

All articles analyze the problem from various angles, but the article titled 'Clash of civilizations' or 'Clash of ignorance' by Prof. J.V. Vilanilam is indeed very insightful. In fact, it is the "clash of ignorance" that has stoked the fires of terrorism all over the world. Matthew Arnold succinctly expressed this in the line "where ignorant armies clash by night". He has analyzed the thesis of Prof. Huntington quite dispassionately.

Civilizations will continue to clash as long as people continue to be greedy, selfish and self-centred. The only way out is to revive humanism. The good work done by all saints, thinkers, reformers and philosophers of the world needs to be sharply focused. Perhaps, this might awaken the dead sensibilities of people.

Dr. Rajni Pandey
Retd. Professor of English
Bhopal.

Well written article

Sukumar Muralidharan's article on THE HINDU in the section 'Media House' (January-March 2009 issue) was well written and factual.

My reaction to Sanyal's "Indlish" was different from Bhargava's review of the book. But he has a valid point

K. Narayanan
The Readers' Editor
THE HINDU